

सूजन संबंधी आंत्र रोग

[स्रोत: द हृदि](#)

हाल ही में सूजन संबंधी आंत्र रोग (Inflammatory Bowel Disease- IBD) जिसमें मुख्य रूप से अल्सरेटिव कोलाइटिस और क्रोहन रोग शामिल हैं, वैश्विक स्तर पर बढ़ रहा है।

सूजन संबंधी आंत्र रोग (IBD) क्या है?

- **परिचय:** IBD, जठरांत्र (gastrointestinal- GI) पथ को प्रभावित करने वाली पुरानी [सूजन संबंधी स्थितियों](#) के लिये एक व्यापक शब्द है।
 - **IBD के दो मुख्य प्रकार:**
 - **क्रोहन रोग (Crohn's disease):** यह मुँह से लेकर गुदा तक पाचन तंत्र के **किसी भी भाग को प्रभावित** कर सकता है। सूजन चकतीदार (patchy) हो सकती है, जिसका अर्थ है कि स्वस्थ ऊतक के क्षेत्र सूजन वाले क्षेत्रों से जुड़े हो सकते हैं। यह अक्सर आंतों की दीवार की परतों को प्रभावित करता है।
 - **व्रणयुक्त बृहदांत्रशोथ (Ulcerative colitis):** **बड़ी आंत (कोलन)** और मलाशय की **आंतरिक परत (म्यूकोसा)** तक सीमित। सूजन लगातार बनी रहती है, गंभीर मामलों में पूरे बृहदान्त्र को प्रभावित करती है।
- **कारण:** IBD का सटीक कारण अज्ञात है, लेकिन शोध आनुवंशिकी, प्रतिरक्षा प्रणाली और पर्यावरणीय कारकों जैसे कारकों की एक जटिल परस्पर क्रिया का सुझाव देता है।
- **लक्षण:** पेट में दर्द और ऐंठन, दस्त, खूनी मल, मल त्याग करने की तत्काल आवश्यकता, वजन कम होना तथा थकान।
- **उपचार:** IBD का कोई वैधानिक उपचार नहीं है, लेकिन उपचार का उद्देश्य लक्षणों को प्रबंधित करना और राहत प्रदान करना है। इनमें दवाएँ, आहार में परिवर्तन और सर्जरी शामिल हैं।
- **भारत में चुनौतियाँ:**
 - **भारत में वर्ष 1990 से वर्ष 2019 तक IBD की घटना लगभग दोगुनी हो गई** है, जिससे बेहतर उपचार परिणामों की सुविधा के लिये शीघ्र पता लगाने की तत्काल आवश्यकता पर बल मिलता है।
 - भारत में IBD का नदिन अद्वितीय चुनौतियाँ प्रस्तुत करता है, विशेष रूप से समाननैदानिक लक्षणों के कारण क्रोहन रोग और आंत्र तपेदिक के बीच अंतर स्पष्ट करने में।
 - जीवनशैली में बदलाव, जिसमें **पश्चिमी आहार** की ओर बदलाव भी शामिल है, को भारत में IBD की बढ़ती घटनाओं में योगदान देने वाले कारकों के रूप में उद्धृत किया गया है।

नोट: IBD आनुवंशिक, प्रतिरक्षा और पर्यावरणीय कारकों से प्रभावित पाचन तंत्र की एक पुरानी सूजन की बीमारी **Chronic Inflammatory Disease** है, जबकि इरिटिबल बाउल सिंड्रोम (IBS) एक **नॉन-इन्फ्लेमेट्री फंक्शनल बोवेल डिसऑर्डर** है, जो संभवतः परिवर्तित आंत्र-मस्तिष्क अंतःक्रिया, आंत्र तंत्रिका का बढ़ने या पाचन तंत्रिका के संकुचन संबंधी मुद्दों से जुड़ा हुआ है।



UPSC सविलि सेवा परीक्षा, वगित वर्ष के प्रश्न

??????????:

प्रश्न. नमिनलखिति कथनों में कौन-सा एक, मानव शरीर में B कोशिकाओं और T कोशिकाओं की भूमिका का सर्वोत्तम वर्णन है? (2022)

- (a) वे शरीर को पर्यावरणीय प्रत्यूजकों (एलर्जनों) से संरक्षति करती हैं ।
- (b) वे शरीर के दर्द और सूजन का अपशमन करती हैं ।
- (c) वे शरीर के प्रतरिक्षा-नरौधकों की तरह काम करती हैं ।
- (d) वे शरीर को रोगजनकों द्वारा होने वाले रोगों से बचाती हैं ।

उत्तर: (d)

प्रश्न. आनुवंशकि रोगों के संदर्भ में, नमिनलखिति कथनों पर वचिर कीजयि:

1. अंडों के अंतःपात्र (इन वटिरो) नषिचन से या तो पहले या बाद में सूत्रकणकि प्रतसिथापन (माइटोकॉण्ड्रयिल रपिलेसमेंट) चकितिसा द्वारा सूत्रकणकि रोगों (माइटोकॉण्ड्रयिल डफ़िज़) को माता-पति से संतान में जाने से रोका जा सकता है ।
2. कसिी संतान में सूत्रकणकि रोग आनुवंशकि रूप से पूरणतः माता से जाता है न कपति से ।

उपर्युक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

- (a) केवल 1
- (b) केवल 2
- (c) 1 और 2 दोनों
- (d) न तो 1 और न ही 2

उत्तर: (c)